दिव्य लीलामृत

उनके द्वारा चैत्यगुरु रूप में हमारा मार्गदर्शन

SGD

"क्या आप यह जानते हैं कि गुरुजी आप सभी से बहुत स्नेह करते हैं?" (वे श्रील गुरुदेव के दीक्षित शिष्य नहीं होने पर भी उन्हें 'गुरुजी' कहकर संबोधित करते थे।) मैं सोचने लगा, "हम तो जानते हैं कि श्रील गुरुदेव हमें बहुत स्नेह करते हैं किन्तु इन्हें इस प्रकार बोलने के लिए किसने और क्यों प्रेरित किया?"

SGD

"वास्तव में, अभी हम ऐसे मोड़ पर पहुँच गए हैं जहाँ निष्कपट प्रार्थना और स्नेहपूर्ण सेवा के अतिरिक्त और कुछ भी बाकी नहीं रह जाता है, जो हम गुरूजी की सेवा में अर्पण कर सकें। किन्तु हाँ, उनकी इच्छा निश्चित रूप से चिकित्सा उपचार से अधिक शक्तिशाली है।"

SGD

SGD

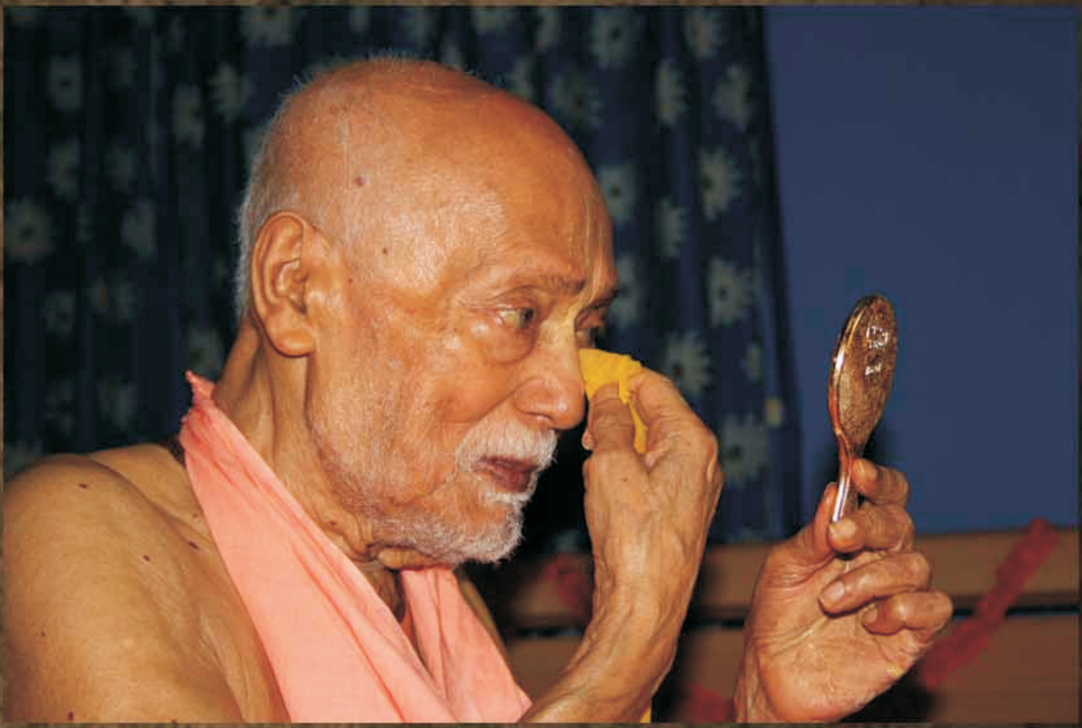

जाँहार दर्शने मुखे
आइसे कृष्ण नाम।
ताँहारे जानिह तुमि
वैष्णव प्रधान।।

श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ
गोस्वामी महाराज जी

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

दूसरी ओर, श्रील गुरुदेव की स्वास्थ्य स्थिति अस्थिर ही बनी रही—किसी-किसी दिन इसमें थोड़ा सुधार होता, तो किसी अन्य दिन, अधिक बिगड़ जाती। प्रत्येक दिन चिकित्सकों को नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। कई अवसरों पर हमने उनकी चिकित्सा के लिए कुछ कठिन निर्णय भी लिए और उन्होंने हमारे लगभग

प्रत्येक निर्णय की प्रतिक्रिया इस प्रकार से दी जैसे उन्होंने उन निर्णयों को स्वीकार किया हो । यद्यपि उन दिनों में उन्होंने अपनी व्यक्तिगत इच्छा को प्रत्यक्ष रूप से हमारे समक्ष व्यक्त नहीं किया, तो भी घटनाक्रम से हम यह अनुभव कर पा रहे थे कि सब कुछ उनके निर्देश और इच्छा के अनुसार ही चल रहा है। बाहिरी रूप से ऐसा प्रतीत होता था कि वे कुछ बोल नहीं रहे हैं, फिर भी उन्होंने बहुत कुछ कह दिया;

ऐसा लगता था कि वे कुछ भी नहीं कर रहे हैं, किन्तु उन्होंने ही सब कुछ किया; और ऐसा प्रतीत होता था कि वे देख नहीं रहे हैं, किन्तु उन्हें सब कुछ ज्ञात था।

श्रीश्वेताश्वतर उपनिषद (3/19) में भगवान् के ऐसे ही विरोधाभासी प्रतीत होनेवाले गुणों का वर्णन किया गया है– अपाणि-पादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रृणोति अकर्णः– "उनके हाथ और पांव नहीं है, फिर भी वे चलते हैं

व उनको अर्पित वस्तुओं को स्वीकार करते हैं; नेत्र और कर्ण नहीं होने पर भी वे देखते व सुनते हैं।"

श्रीचैतन्य चरितामृत, मध्य-लीला (22/72) में कहा गया है कि श्रीकृष्ण के सभी अप्राकृत गुण कृष्ण-भक्त में भी विद्यमान हैं—कृष्ण भक्ते कृष्णेर गुण सकलि संचारे। इसके अनुसार, भगवान् के उपर्युक्त गुण (श्रीश्वेताश्वतर उपनिषद, 3/19) वैष्णव में भी विद्यमान

रहते हैं। इसलिए, हमारे लिए यह समझना कठिन नहीं है कि उस समय बाहरिक रूप से हम कर्ता लगने पर भी, होता वही था जैसा वे चाहते थे। निम्नलिखित घटना इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

श्रील गुरुदेव के अस्पताल में भर्ती होने के 22 दिनों के बाद, 20 दिसंबर को, उनके स्वास्थ्य सम्बंधित एक और जटिल समस्या उपस्थित हुई। इसके कारण, हमें ऐसा लग रहा था कि अस्पताल में भर्ती होने के

समय श्रील गुरुदेव की जो स्वास्थ्य-स्थिति थी अब वही हमारे सामने दुबारा उपस्थित होनेवाली है। आगे और कोई उपचार भी हमें दिखाई नहीं दे रहे थे क्योंकि उस समय उपलब्ध सीमित उपचारों में से अधिकांश उनकी सेवा में पहले से ही नियोजित किए जा चुके थे। इस झटके के बाद, हम मानसिक रूप से पूरी तरह से टूट चुके थे।

जब डॉ. बोरा दोपहर में श्रील गुरुदेव से मिलने आए, तब

हमने उनसे अपनी चिंता व्यक्त की। किन्तु उन्होंने उस विषय में बिना कुछ कहे परोक्ष रूप से उत्तर दिया, "क्या आप यह जानते हैं कि गुरुजी आप सभी से बहुत स्नेह करते हैं?" (वे श्रील गुरुदेव के दीक्षित शिष्य नहीं होने पर भी उन्हें 'गुरुजी' कहकर संबोधित करते थे।) मैं सोचने लगा, "हम तो जानते हैं कि श्रील गुरुदेव हमें बहुत स्नेह करते हैं किन्तु इन्हें इस प्रकार बोलने के लिए किसने और क्यों प्रेरित किया?" जब मैंने उनसे

पूछा कि उन्हें ऐसा क्यों अनुभव हुआ, तो उन्होंने कुछ ऐसा कहा जो हमारे लिए गहन चिंतन करने योग्य था। उन्होंने कहा,“गुरुजी ने आपको बहुत से सेवा के अवसर दिए। यद्यपि साधारणत: चिकित्सकों और कर्मचारियों को छोड़कर किसी भी व्यक्ति को आईसीयू वार्ड में रहने की अनुमति नहीं होती, फिर भी यह उन्हीं की कृपा है कि आपको आईसीयू वार्ड में भी उनकी सेवा का अवसर मिला। उन्होंने आपको यह संतुष्टि का अनुभव

करवाया कि आपने उन्हें सर्वश्रेष्ठ सेवा के साथ-साथ वर्तमान समय में उपलब्ध सर्वोत्तम चिकित्सा भी अर्पण की। इसके द्वारा, उन्होंने आपको किसी भी संभावित अपराध-बोध से मुक्त कर दिया कि आपके द्वारा उनकी सेवा में कोई कमी व चूक रह गई। इतना ही नहीं, वे आपकी सभी सेवाओं को स्वीकार भी कर रहे हैं। इससे अधिक और क्या चाहिए यह बोलने के लिए कि वे आपसे बहुत स्नेह करते हैं?" जब मैंने उनसे कहा– 'हम

यह आशा करते हैं कि हम और अधिक समय तक उनकी सेवा कर पाएंगे,' तब उन्होंने गंभीरता से उत्तर दिया, "वह उनकी इच्छा पर छोड़ दीजिए।" इतना कहने के बाद, डॉ. बोरा वहाँ से चले गए।

डॉ. बोरा के शब्द मेरे कानों में लगातार गूंजते रहे। जब मैं उस पर गहन चिंतन करने लगा, तो न जाने क्यों मुझे अचानक ऐसा अनुभव हुआ कि उस वार्तालाप के द्वारा हमें किसी

तरह का कोई महत्त्वपूर्ण संकेत दिया गया था। मैंने अन्य भक्तों के समक्ष अपना विचार व्यक्त किया और डॉ. बोरा के साथ भी विस्तार से चर्चा करने के बारे में सोचा। रात में जब हम उनसे मिले, तब मैंने पूछा, "दोपहर के आपके गहन शब्दों के पीछे का उद्देश्य मैं और अधिक गहराई से समझना चाहता हूँ। क्या आपके बोलने का अर्थ कुछ ऐसा तो नहीं था कि अब हमें श्रील गुरुदेव को मठ में ले जाना चाहिए?" डॉ. बोरा ने अब स्पष्ट रूप से कहा,

“वास्तव में, अभी हम ऐसे मोड़ पर पहुँच गए हैं जहाँ निष्कपट प्रार्थना और स्नेहपूर्ण सेवा के अतिरिक्त और कुछ भी बाकी नहीं रह जाता है, जो हम गुरूजी की सेवा में अर्पण कर सकें। किन्तु हाँ, उनकी इच्छा निश्चित रूप से चिकित्सा उपचार से अधिक शक्तिशाली है। इसलिए अब उन्हें मठ में ले जाना उचित है क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन वहीं पर बिताया। देखिए, अस्पताल में भक्त भी अपनी इच्छा के अनुसार उनके दर्शन

करने नहीं आ सकते हैं, और वे लंबे समय तक यहाँ नहीं रुक सकते हैं। किन्तु मठ में भक्त बिना कोई रुकावट के उनके दर्शन कर सकते हैं, उनसे बात कर सकते हैं व उनके चरण स्पर्श कर सकते हैं। अब भक्तों को अपनी इच्छा के अनुसार, उनके प्रति अपने प्रेम और स्नेह का आदान-प्रदान करने दीजिए।"

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वास्तव में यह संदेश श्रील

गुरुदेव की ओर से ही था, क्योंकि GNRC अस्पताल में आने का उनका उद्देश्य सम्भवत: पूरा हो गया था और इसलिए अब वे मठ में वापस जाना चाहते थे। पहले जब भी हमने श्रील गुरुदेव को अस्पताल में भर्ती करवाया था, तब वे कुछ दिनों के बाद हमें प्रत्यक्ष रूप से बोल देते थे कि अब उन्हें मठ वापस जाना है। किन्तु इस बार उन्होंने अपनी इच्छा प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त नहीं कर चिकित्सक के माध्यम से प्रकाशित की। इस बार GNRC

अस्पताल में, कई अवसरों पर हमने अनुभव किया कि उन्होंने चिकित्सकों या अस्पताल के कर्मचारियों के माध्यम से या तो हृदय में चैत्यगुरु के रूप से हमारा मार्गदर्शन किया। डॉ. बोरा के साथ हमारे उपरोक्त वार्तालाप के बाद, हमने श्रील गुरुदेव को कोलकाता मठ में वापस लाने की व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी।

GNRC अस्पताल की 30 दिनों की अपनी दिव्य

लीलाओं में, श्रील गुरुदेव ने अपने मौन के द्वारा ही बहुत कुछ व्यक्त किया और अपने अलौकिक एवं अचिन्त्य प्रभाव से उन्होंने कई जीवों को अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने सभी भक्तों को मानसिक और शारीरिक रूप से निरंतर उनकी सेवा में नियोजित रहने का स्वर्णिम अवसर भी प्रदान किया। इसलिए इसमें और क्या संदेह रह जाता है कि उन्होंने हमारे चरम कल्याण के लिए ही ऐसी अवस्थ-लीला प्रकाशित की

थी? फिर भी, इस विषय की पुष्टि करने के लिए, जो शास्त्रों और साधुओं ने शुद्ध भक्तों की अस्वस्थ लीला के मर्मार्थ पर प्रकाश डालते हुए कहा है, उनमें से कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD